

यूक्रेनी लोक कथा



स्माइली-विली लोमड़ी

चित्र: पी. डेयलिक , हिंदी: अरविन्द गुप्ता



एक दिन स्माइली-विली लोमड़ी ने एक मुर्गी
चुराई और उसे लेकर सड़क पर भाग निकली.
वह दौड़ी और वह दौड़ी लेकिन कुछ देर के
बाद रात घिर आई और बहुत अंधेरा हो गया.



स्माइली-विली को सामने एक झोपड़ी दिखी और
वह उसके अंदर गई, वहां रहने वाले लोगों को उसने
झुककर प्रणाम किया और कहा:

"शुभ संध्या, अच्छे लोग!"

"आपको भी शुभ संध्या, स्माइली-विली!"

"कृपा मुझे अपनी झोपड़ी में रात गुजारने दें!"

"लेकिन, स्माइली-विली, हमारे पास बहुत कम जगह
है, आपके रहने के लिए यहाँ कोई जगह नहीं है."



"कोई बात नहीं! उस बैंच के नीचे मैं अपना बिस्तर बना लूँगी, अपनी झाड़ीदार पूछ को अपने सिर के ऊपर रखकर, और किसी तरह मैं रात बिताऊँगी."

"बहुत अच्छा, तो फिर आप रह सकती हैं!"

"मैं अपनी मुर्गी कहाँ रखूँ?"

"चूल्हे के नीचे."



स्माइली-विली ने वैसा ही किया जैसा
उससे कहा गया था. लेकिन जब रात हुई
तो वह चुपचाप उठी, उसने मुर्गी खाई और
उसके सारे पंख एक कोने में फेंक दिए.



और सुबह, लोमड़ी बहुत जल्दी उठी. उसने अपने
आप को खूब धोया, अपने मेज़बानों को शुभ प्रभात
की शुभकामना दी और कहा:

"मेरी मुर्गी कहाँ है?"

"चूल्हे के नीचे."

"मैंने देखा, लेकिन वो वहां नहीं है." और फिर
लोमड़ी वहां बैठ कर रोने लगी.



"संसार में मेरे पास जो कुछ भी था वह सिर्फ मेरी
मुर्गी थी, और तुमने उसे भी मुझसे चुरा लिया.
अब तुम्हें बदले में मुझे एक बतख देनी होगी.
और किसी से काम नहीं चलेगा, तुम्हें मुझे एक
बतख देनी ही होगी."



फिर स्माइली-विली ने बतख ली,
उसे अपनी बोरी में डाला और
अपने रास्ते चली.



वह दौड़ती रही और वह दौड़ती रही और रात घिर आई. लेकिन वह अभी भी सड़क पर थी. उसने वहाँ एक झोपड़ी खड़ी देखी और वह उसके अंदर आकर बोली:

"शुभ संध्या, अच्छे लोग!"

"आपको भी शुभ संध्या, स्माइली-विली!"

"मुझे अपनी झोपड़ी में रात गुजारने दो."

"हमारी झोपड़ी बहुत छोटी है, आपके रहने के लिए यहाँ पर कोई जगह नहीं है."



"कोई बात नहीं! उस बैंच के नीचे मैं अपना बिस्तर
बना लूँगी, अपनी झाड़ीदार पूँछ को अपने सिर के ऊपर
रखकर, मैं किसी तरह रात बिताऊँगी."

"बहुत अच्छा, फिर आप रह सकती हैं!"

"मैं अपनी बतख कहाँ रखूँ?"

"हंस के बाड़े में."



स्माइली-विली ने वैसा ही किया जैसा उसे
बताया गया. लेकिन जब रात हुई, तो वह
एकदम चुपचाप उठी, उसने बतख को खा लिया
और उसके पंखों को एक ढेर में इकट्ठा किया.



और सुबह को वह बहुत जल्दी उठी. उसने
अपने आप को खूब धोया, अपने मेज़बानों को
शुभ प्रभात की शुभकामना दी और कहा:



"मेरी बतख कहाँ है?"

उन्होंने हंस-बाड़ में देखा, लेकिन बतख वहां नहीं थी.
घर के मालिक ने कहा:

"शायद हमने उसे अन्य बतखों के साथ उसे छोड़
दिया है?"

फिर स्माइली-विली जोर-जोर से रोने लगीं.



"दुनिया में मेरे पास केवल बतख ही थी, और अब वो भी चली गई!" लोमड़ी रोई. "अब आपको बदले में मुझे एक हंस देना होगा! और किसी चीज़ से काम नहीं चलेगा आपको मुझे एक हंस देना ही होगा."

फिर स्माइली-विली ने एक हंस लिया, उसे अपनी बोरी में डाला और फिर अपने रास्ते चली गई.



वह चलती रही और तब तक चलती रही जब तक कि
रात नहीं हो गई. वहां उसने एक झोपड़ी देखी, वो अंदर
गई और बोली:

"शुभ संद्या, अच्छे लोगों! मुझे अपनी झोपड़ी में रात
गुजारने दो!"

"हम ऐसा नहीं कर सकते, स्माइली-विली, हमारे पास
कोई जगह नहीं है!"



"कोई बात नहीं! उस बैच के नीचे मैं अपना बिस्तर बनाऊँगी, अपनी झाड़ीदार पूछ को अपने सिर के ऊपर रखकर, किसी तरह मैं अपनी रात बिताऊँगी."

"बहुत अच्छा, तो फिर आप रह सकती हैं!"

"मैं अपना हंस कहाँ रखूँ?"

"खलिहान में भेड़ के बच्चों के साथ."

स्माइली-विली ने वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया था, लेकिन जब रात हुई, तो वह एकदम चुपचाप उठी, उसने हंस को खा लिया और पंखों को एक ढेर में इकट्ठा किया. और सुबह, वह बहुत जल्दी उठ गई, उसने अपना मुंह धोया अपने मेजबानों को शुभ प्रभात कहा और पूछा:

"मेरा हंस कहाँ है?"

उन्होंने जाकर देखा, लेकिन हंस गायब था.



स्माइली-विली ने कहा:

"इस तरह की बात मेरे साथ पहले कभी नहीं हुई, चाहे मैं कहीं भी रही हों या रात बिताई हो. मेरा कभी कुछ नहीं खोया."

घर के मालिक ने कहा:

"हो सकता है भेड़ के बच्चों ने तुम्हारे हंस को कुचलकर मार डाला हो?"

फिर स्माइली-विली ने उत्तर दिया:

"यह सब बहुत अच्छा है, लेकिन अब तुम्हें बदले में मुझे एक मेमना देना होगा. और किसी चीज़ से मेरा काम नहीं चलेगा अब मुझे एक मेमना देना ही होगा."

फिर स्माइली-विली ने मेमने को अपनी बोरी में डाला और अपने रास्ते चली गई.



वह भागी और वह भागी और, इससे पहले कि उसे पता चलता, रात हो गई. उसने एक झोपड़ी देखी और रात के लिए रहने को कहा.

"मुझे अंदर आने दो, अच्छे लोगों!" उसने विनती की.

"हम ऐसा नहीं कर सकते, स्माइली-विली, हमारे पास कोई जगह नहीं है. आपके रहने के लिए यहाँ वाकई कोई जगह नहीं है."

"कोई बात नहीं! एक बैंच के नीचे मैं अपना बिस्तर बनाऊंगी, अपनी झाड़ीदार पूँछ को अपने सिर के ऊपर रखूँगी, और इसी तरह मैं रात बिताऊंगी."

"बहुत अच्छा, फिर आप रह सकती हैं!"

"मैं अपना मेमना कहाँ रखूँ?"

"उसे आँगन में छोड़ दो."



स्माइली-विली ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था, लेकिन जब रात हुई तो वह चुपचाप उठी और मेमने को खा गई. और सुबह, वह बहुत जल्दी उठी और खूब नहा धोकर बोली, जैसा उसने पहले भी कई बार कहा था:

"मेरा मेमना कहाँ है?"

और फिर लोमड़ी बैठ कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी.

"इस तरह की बात मेरे साथ पहले कभी नहीं हुई, चाहे मैं कहीं भी रही हूँ या मैंने कहीं भी रात बिताई हो."



घर के मालिक ने कहा:

"शायद मेरी बहू ने बैलों को पानी पिलाने के लिए हाँकते समय उसे छोड़ दिया होगा?"

स्माइली-विली ने कहा:

"वह सब ठीक है, लेकिन तुम्हें मेरे मेमने के बदले में तुम्हें मुझे अपनी बहू देनी होगी."



बूढ़ा आदमी रोया और बूढ़ी औरत रोई और
उनका बेटा रोया और उनके बेटे के बच्चे रोए,
लेकिन स्माइली-विली ने बूढ़े आदमी की बहू को
पकड़ लिया और उसे अपनी बोरी में डाल लिया.



उसने बोरी को रस्सी से बांधा और फिर कुछ पल के लिए वो झोपड़ी से बाहर गई. और तभी बूढ़े आदमी के बेटे ने अपनी पत्नी को बोरे से बाहर निकाला और उसके स्थान पर एक कुत्ते को डाल दिया.



स्माइली-विली वापस आई और उसने बोरा उठाया
और वो उसे अपने साथ ले गई. वह चली और वह
चली और उसने कहा:

"मुर्गी के लिए एक बतख, बतख के लिए एक हंस,
हंस के लिए एक मेमना और मेमने के लिए एक
युवा पत्नी!"



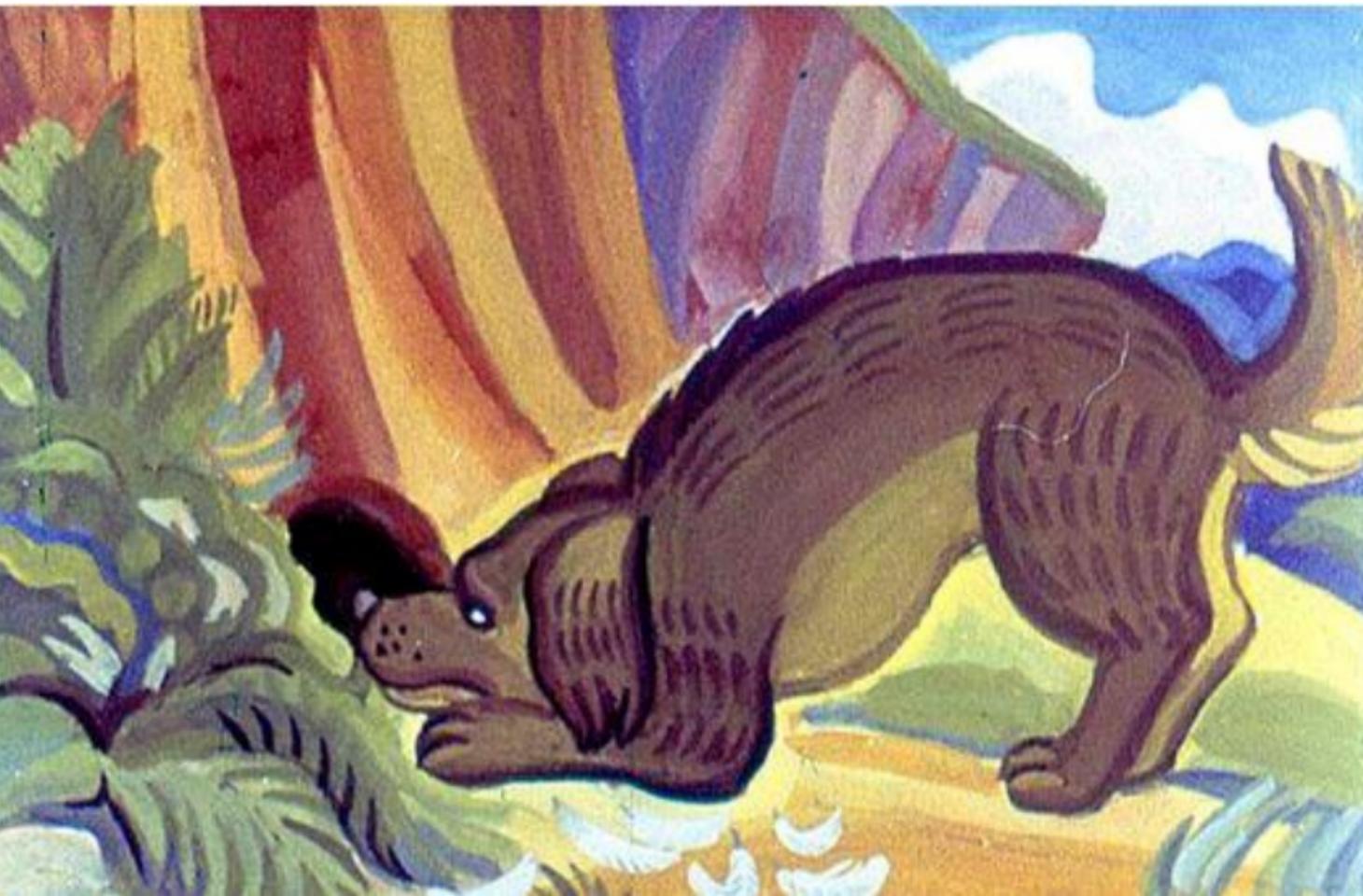
उसने बोरी को हिलाया और कुत्ता उसके अंदर से घुराया:

"घुर्र!"

स्माइली-विली ने कहा:

"बूढ़े की बहू बहुत डरी हुई है, चिल्ला रही है! मुझे लगता है कि मैं अंदर झाँक कर देख लूँ."

उसने बोरी खोल दी और लो! कुत्ता भौं! भौं! भौं! करते हुए उसकी ओर उछल पड़ा!



स्माइली-विली दूर हट गई, लेकिन कुता
उसके पीछे-पीछे भागा. स्माइली-विली जंगल
में और गहराई तक भागती हुई गई, पर कुते
ने उसका लगातार पीछा किया!



लेकिन आखिरकार स्माइली-विली अपने लोमड़ी-छेद तक पहुँच गई और वहाँ अंदर जाकर छिप गई। वह गड्ढे में बैठ गई, और कुत्ता उसके ऊपर खड़ा रहा लेकिन वो अंदर नहीं जा सका।



स्माइली-विली ने कहा:
"छोटे कान, छोटे कान!
आओ, मुझे बताओ क्यों,
इस अच्छे दिन पर
उस नीच कुते से
तो तुम क्यों भाग निकले?"



और छोटे कानों ने उत्तर दिया:

"देखो स्माइली-विली, जिसे हम देखने से डर रहे थे

वह नीच कुत्ता तुम्हारी सोने की चमड़ी को फाड़ देगा!"

स्माइली-विली ने कहा, "धन्यवाद, छोटे कान, मैं तुम्हारे लिए सोने की एक जोड़ी बालियां खरीदूँगी," स्माइली-विली ने कहा, और उसने फिर से पुकारा:

"छोटे पैर, छोटे पैर!

आओ, मुझे बताओ क्यों, इस अच्छे दिन पर

उस नीच कुत्ते से तो तुम भाग निकले?"

और छोटे पैरों ने उत्तर दिया:

"देखो स्माइली-विली, जिसे हम देखने से डर रहे थे
वह नीच कुत्ता तुम्हारी सोने की चमड़ी को फाढ़ देगा.
और हम धीमे नहीं चले, हम उतनी ही तेजी से चले,
हम झपकियाँ लेकर आगे की ओर भागे!"

स्माइली-विली ने कहा, "धन्यवाद, लिटिल फीट, आपका हार्दिक धन्यवाद.
मैं तुम्हारे लिए चांदी की हील वाले सोने के जूतों की एक जोड़ी खरीदूँगी,"
स्माइली-विली ने कहा, और वो फिर से चिल्लाई:

"छोटी बड़ी पूँछ, झाड़ू-ब्रश-छड़ी,
तुम इतनी जल्दी क्यों भाग गए?
इस उज्ज्वल दिन पर उस नीच कुत्ते से?
छोटी बड़ी पूँछ, आओ कृपया मुझे बताओ!"



और छोटी बड़ी पूँछ ने उत्तर दिया:

"मैं जल्दी मैं चला गया, लेकिन मैं झाड़ी में फंस गया,

और मैंने तुम्हें कोड़े मारे,

और मैंने तुम्हें फँसा दिया,

और मैं धीमी गति से चला, मैं तेज नहीं चला,

क्योंकि मैं तुम्हें आखिरकार पकड़ा हुआ देखना चाहता था!"

स्माइली-विली बहुत गुस्से में थी और उसने अपनी पूँछ बिल से बाहर निकाली और बोली:

"अगर ऐसा है, तो, कुते, मेरी पूँछ तुम्हारे पास हो सकती है. जितना हो सके इसे काट डालो!"

और कुते ने अपने दाँत इतनी ज़ोर से पूँछ में गड़ा दिए कि उसने पूरी पूँछ ही काट डाली!